RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 40 अंक 15 हल्द्वानी सम्वत् 2081 सोमवार 16 सितम्बर 2024 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

दिसम्बर में निकाय चुनाव देखते हुए नेता कमर कसने लगे

निकायों का परिसीमन पूर्ण हो चुका है, 10 नवम्बर को जारी होगी अधिसूचना

कार्यालय प्रतिनिधि

निकाय चुनाव अब और नहीं लटक सकते, सारी गुंजाइशों के बाद दिसम्बर में इनको करवाना होगा। इन दिनों मेले, त्यौहार में उलझने के बाद रामलीला और फिर एकदम चुनाव को देख नेता कमर कसने लगे हैं। निकाय चुनाव के लिये साल भर से तैयारी में जुटे नेता अब खुलकर सामने आ चुके हैं। पार्टी टिकट के लिय भी जोड़तोड़ की जा रही है। नगरनिगम में मेयर पद के लिये तो तमाम बड़े नेताओं पर इस बात का दबाव है कि वह किसके पक्ष में टिकट की बात करें। इस बार चुनाव लड़ने के लिये कई नए चेहरे पहले से बेताब दिखाई दे रहे हैं। बताते चलें कि राज्य में नगर निगम 11, नगर पालिका परिषद 45, नगर पंचायत 49 हैं। तीन नगर पंचायतों बदरीनाथ, केदारनाथ व गंगोत्री में चुनाव नहीं होते।

सरकार की ओर से पहले बताया गया कि चुनाव के लिये निकायों में परिसीमन की प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है और अक्टूबर मध्य तक ओबीसी आरक्षण और 11 निकायों में मतदाता सूचियों के पुनरीक्षण से सम्बन्धित कार्य सम्पन्न कराने की योजना है। ऐसे में नवम्बर माह में राज्य के 125 में से 102 निकायों में चुनाव हो जाएंगे। नगर निकायों का कार्यकाल गत वर्ष 2 दिसम्बर को समाप्त होने के बाद से यह प्रशासकों के हवाले हैं।

इसके बाद हाईकोर्ट में सरकार ने चुनाव कार्यक्रम पेश किया। इसके अनुसार 10 नवम्बर को अधिसूचना जारी होगी और 25 दिसम्बर से पहले निकायों का गठन हो जाएगा। मुख्य न्यायाधीश रितु बाहरी एवं न्यायमूर्ति राकेश थपलियाल की खण्डपीठ के समक्ष मामले की सुनवाई हुई। पूर्व में हुई सुनवाई में हाईकोर्ट ने जल्द चुनाव सम्पन्न कराने के निर्देश दिये थे।

खेल का जुनून और प्रतिभाओं को निखारते हैं गंगा सिंह मर्तोलिया

डॉ.पंकज उप्रेती

भारतीय रिजर्व बैंक लखनऊ से प्रबन्धक पद से सेवानिवृत्त गंगा सिंह मर्तोलिया फुटबाल, टेबल टेनिस के कुशल खिलाड़ी होने के साथ ट्रेकिंग में निपुण अभ्यासी हैं। खेलों के प्रति इनका जुनून और युवा प्रतिभाओं को निखारने का हुनर प्रेरणादायी है।

जोहार-मर्तोली के शेर सिंह मर्तोलिया जो मगरबला, तल्ला जोहार में बूबू नाम से जाने जाते थे उनके दो पुत्र हुए- गोबर्द्धन सिंह और खड़क सिंह। इन्हीं गोबर्द्धन सिंह मर्तोलिया के पुत्र हैं गंगा सिंह मर्तोलिया फिर इनके पुत्र हुए कमल सिंह और नवल सिंह। दूसरी ओर खड़क सिंह मर्तोलिया के पुत्र हरीश सिंह और बलवन्त सिंह हैं। मर्तोलिया जी परिवार ग्राम बला से सुरिंग में है।

गंगा सिंह मर्तोलिया की प्राइमरी शिक्षा (कक्षा चार तक) बला में हुई। इसके बाद परिवार के सुरिंग जाने पर वहाँ पढ़ने लगे। मुनस्यारी इण्टर कालेज से 1975 में इण्टर करने के पश्चात डीएसबी नैनीताल से स्नातकोत्तर किया। उस समय यह बुर्किल हास्टिल में रह रहे थे। 27 जून 1979 को भारतीय रिजर्व बैंक कानपुर में इनकी नौकरी लग गई। 6 माह के अन्तर में केदार सिंह मर्तोलिया भी रिजर्व बैंक में आ चुके थे। मार्च 1082 में गंगा सिंह जी रिजर्व बैंक लखनऊ आ गये और 31 अगस्त 2016 को प्रबन्धक पद से सेवानिवृत्त हुए। इस पूरी अवधि में इन्होंने अपनी सरकारी सेवा के अलावा बचपन के खेल जुनून और ट्रेकिंग अभियान को बनाए रखा। सेवानिवृत्त होने के बाद भी इन्हें सम्मान स्वरूप बुलाया गया। गंगा सिंह जी वर्तमान में जीवनपुरम्, हल्द्वानी में अपने परिवार के साथ निवास करते हैं।

बचपन से ही पहाड़ के प्रिय खेल फुटबाल, बालीकाल की रुचि के अलावा गंगा सिंह मर्तोलिया जब नैनीताल में उच्चशिक्षा के लिये आये तो माउंटेरिंग क्लब नैनीताल से जुड़ गये और एडवेंचर कोर्स के लिये भी रुचि हुई। इन्हीं सब का परिणाम था लखनऊ में रहते हुए इस प्रकार का क्लब बनाया। माउंट्रेक एसोशिएशन के बैनर तले पथरारोहण और पर्वतारोहण करते थे। भारतीय रिजर्व बैंक की ओर से 25 साल तक स्थानीय व अखिल भारतीय स्तर पर फुटबाल टीम का नेतृत्व किया।

लखनऊ की मीठी यादों को बताते हुए गंगा सिंह बताते हैं- 'रिजर्व बैंक की साहित्यिक, खेल गतिविधियों के लिये केदार सिंह मर्तोलिया को जिम्मेदारी दी गई थी। अध्यक्ष, सचिव पद पर रहते हुए केदार सिंह जी व साथियों ने ऊर्जावान वातावरण बनाया था। इसके अलावा सीमान्त क्षेत्र के लोगों की अपनी रचनात्मक गतिविधियों के साथ आयोजनों का सिलसिला बना हुआ था। पहाड़ से आने वाले युवाओं को हर प्रकार से प्रोत्साहित करते थे। उन्हीं दिनों में एवरेस्ट विजेता लवराज धर्मशक्तू भी कई अभियानों में जुड़े।' उत्तर प्रदेश के समय पहाड़ के लोगों के लिये लखनऊ खास जगह हुआ करती थी। शिक्षण, प्रशिक्षण के लिये लखनऊ ही मुख्य केन्द्र रहा और इस जगह पहाड़ की कठिन डगर से जो लोग पहुँचे थे उन्होंने अपनी मेहनत से प्रतिष्ठा प्राप्त की और अपनी संस्कृति का प्रचार-प्रसार भी किया। गंगा सिंह मर्तोलिया भी उनमें से एक

शेष पृष्ठ 2 पर

मुनस्यारी-मिलम जोहार निर्माणाधीन मोटरमार्ग से कहीं खुशी कहीं गम की स्थिति

जगदीश सिंह वृजवाल

भारत-तिब्बत सीमा प्रान्त क्षेत्र मुनस्यारी तथा मिलम जोहार निर्माणाधीन मोटरमार्ग कार्य प्रगति पर है। अन्तिम गाँव मिलम से दक्षिण की ओर सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) द्वारा सड़क निर्माण कार्य तैयार किया जा रहा है वहीं मुनस्यारी से उतर दिशा को बढ़ते हुए निजी कम्पनी सड़क निर्माण का कार्य कर रही है। कई वर्षों के पश्चात अब मुनस्यारी से लगभग 20-25 किमी की दूरी रड़गाड़ी से कुछ दूर उत्तर की ओर स्यूनी नामक स्थान पर दोनों ओर से सड़क मिलान का कार्य पूर्ण हो चुका है। अब मिलम जोहार जाने वाले यात्रियों, पर्यटकों के लिए कठिन मार्ग, कई पड़ाव से होकर नहीं जाना पड़ेगा। चद घण्टों के सफ़र से ही मिलम जोहार का दर्शन हो जाएगा, लोगों की बांछे खिलने लगी है। अब मजे-मजे में पौराणिक लखनपुर के रमणीय सौन्दर्यता का वर्णन करें और पर्यटकों से जोहार गुलजार होते दिखाई देने वाली है।

भारत-तिब्बत सीमा होने के कारण मार्ग में जगह-जगह सैनिक चौकीयां बनी हैं तथा बोर्डर पर वर्ष भर भारत सरकार के सैनिक, अर्द्धसैनिक बलों की टुकड़ी तैनात रहती हैं। जहाँ कई पड़ाव पैदल मार्ग तय करने के पश्चात अन्तिम प्रवासी गाँव मिलम पहुँचा जाता है। यहाँ के मूल निवासी शौकाओं ने भारत-तिब्बत व्यापार बन्द होने के पश्चात प्रवास पर जाना छोड़ दिया था, जो आज वीरान खण्डहरों के भग्नावशेष में तब्दील हो चुके हैं किन्तु आज भी कुछ परिवार, लोग अपनी रोजी-रोटी की तलाश इन गाँवों में, मार्ग में चलते रहते हैं। जो खेतीबाड़ी, पशुपालन, जड़ी-बूटी दोहन, मजदूरी कर अपने आजिवीका से परिवार का भरण-पोषण करते हैं यहाँ बर्षो से घोड़े खच्चर, भेड़ बकरी पालक,

शेष पृष्ठ 2 पर

षष्टम् पुण्यतिथि

स्व.कमला उप्रेती

(सम्पादक- पिघलता हिमालय)

16.11.1952 - 15.9.2018

आपकी ममतामयी छाँव में ही हमने दुनिया को जाना। आपकी दूरदृष्टि, त्याग-तपस्या हमारी बुनियाद है। आपकी प्रेरणा से ही हम अपने मिशन पर अडिग हैं।

षष्टम् पुण्यतिथि पर नमन।

समस्त परिजन

एवं

पिघलता हिमालय परिवार

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

जोशीमठ जैसे हालात काण्डा में!

जनपद बागेश्वर के काण्डा में जोशीमठ जैसे हालात न बन जाएं इसके लिये कुछ सामाजिक लोग जुट गये हैं और एनजीटी ने जवाब भी मांगा है। धड़ल्ले से बड़े पैमाने पर हो रहे खनन के चलते काण्डा इलाके में जोशीमठ जैसे हालात बनते जा रहे हैं। इस पर नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने संज्ञान लिया है। एनजीटी ने इसे गम्भीरता से लेते हुए केन्द्र सरकार, केन्द्रीय प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड से जवाब मांगा है।

हाल ही में मीडिया रिपोर्ट में कहा गया था कि बागेश्वर जिले में धड़ल्ले से हो रहे खनन के चलते काण्डा इलाके में जोशीमठ जैसे हालात उत्पन्न हो रहे हैं। यहां लोगों के घरों, मन्दिरों और सड़कों पर दरारें पड़ने लगी हैं। एनजीटी प्रमुख जस्टिस प्रकाश श्रीवास्तव और विशेषज्ञ सदस्य डॉ. अफरोज अहमद की पीठ ने स्वतः संज्ञान लेते हुए मामले में नोटिस जारी किया। पीठ ने केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, सीपीसीबी के अलावा उत्तराखण्ड प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड और बागेश्वर के जिलाधिकारी को नोटिस जारी कर वास्तविक रिपोर्ट दाखिल करने का आदेश दिया।

बागेश्वर और बेरीनाग के बीच में पड़ने वाला काण्डा क्षेत्र अनाप-सनाप खनन के कारण अति सम्वेदनशील हो चुका है। इलाके में दरार आने और खतरे को लेकर पिछले एक साल से लगातार शिकायतें आ रही हैं। लोग अपने घरों को छोड़ने पर मजबूर हो रहे हैं। स्थानीय लोगों का आरोप है कि प्रशासन से कई बार शिकायत की है लेकिन किसी ने भी सुध नहीं ली। हालात यह हैं कि एक हजार साल पुराने कालिका मन्दिर में भी दरारें हैं। यह नुकसान पचास मीटर दूर स्थित एक चाक खदान को हुआ है।

इस जिले में एक सौ तेईस खड़िया खानें हैं और 59 में खनन हो रहा है। मानसून काल में जुलाई से लेकर सितम्बर तक खनन कार्य बन्द रहता है। असल में खड़िया खनन के इस पूरे कारोबार में मुनाफे के लिये बड़े कारोबारी का ध्यान गया तो उन्होंने फटाफट अपने लाभ के चक्कर में क्षेत्रवासियों को भी लोभ देकर कार्य सिद्ध करने शुरू कर दिये। खनन में बड़ा लाभ देखते हुए बाद में दबंगता बढ़ती गई और वैध के साथ अवैध का खेल भी हुआ। काण्डा ही क्या अन्य स्थानों पर भी बेहिसाब खुदान हो गया। हालांकि इनका निरीक्षण और मानकों की बात कही जाती रही है। अब जबकि काण्डा के हालात बिगड़ते जा रहे हैं, इस सच्चाई को सभी ने जानना चाहिये कि प्रकृति के साथ मनमानी ठीक नहीं है। अपने लोभ के लिये एक इलाका बर्बाद करने वालों को प्रकृति के भक्षक ही कहे जाएंगे। जबकि सनातन व्यवस्था में प्रकृति को देवता के रूप में पूजने का विधान है। जिससे हमारा भरण-पोषण हो उसे संवारने के बजाए उसका मनमाना दोहन करना अन्याय होगा।

यह अटल सत्य है प्रकृति अपने सन्तुलन के लिये समय में नहीं बंधी है। उसे जब लगता है उलट-पलट की जाए, हो ही जाती है। पूरी दुनिया और अपने आस-पास हो रही घटनाओं से सबक सीखते हुए हमें सुधर जाना चाहिये।

मुनस्यारी-मिलम जोहार निर्माणाधीन.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

मजदूर यहां सैनिकों का सामान, खाद्यान्न, आदि सामग्री ढोकर अच्छी खासी आमदनी कर लेते हैं जिससे घर परिवार का खर्चा आसनी से चल जाता है, वर्षों से पड़ावों के होटल व्यवसायी जो अपने रोजगार में लगे थे। अब उनके चेहरे की मायूसी, परिवार पर आते सकंट के बादल मंडराते देख अति चिन्तित हैं।

जोहार मार्ग का मुख्य पड़ाव लीलम, बोगडियार, रिलकोट , बूर्फू, मिलम जिसका उल्लेख सरकारी अभिलेखों में भी है इन मार्गो से जुड़े सैकड़ों कामगार, वर्ष में माह मार्च -अप्रैल से अक्टूबर-नवम्बर तक कार्य करते हैं। घोड़े-खच्चर व्यवसायी, भेड़ बकरी पालन, मजदूर, होटल व्यवसायी पड़ाव-दर-पड़ाव के चलते अच्छी मजदूरी कमा लेते हैं। होटल व्यवसायी को अपने बिक्रय किये गये चीजों की ऊंची दर प्राप्त हो जाती हैं। मजदूर को अच्छी मजदूरी प्राप्त होने से जोहार में मजदूरी कार्य करना उचित समझते थे।

कुछ लोग तो अपने विरासती कार्य को आज ही सम्भाले हुए हैं अब एक अफरा-तफरी का माहौल, रोजी रोटी के संकट से डरे सहमे लोग जिनके पास बैकल्पिक कार्य करने का तजुर्बा, साधन भी नहीं है चुपचाप गम के घूंट पिये जा रहे हैं। आज, अब तक दिखाई देने वाले घोड़े खच्चर, भेड़ बकरी व्यवसायी जो विरासती प्रतीक थे अब उस पर भी अन्तिम कील ठोक देने की तैयारी की जा रही है। भविष्य में जिसे देखना दुर्लभ हो जाएगा।

आज जहाँ विकास की गंगा बहाने की बात कही जाती हैं वहीं सैकड़ों चेहरे की मायूसी, बेबसी का सुध लेने वाला कोई भी नहीं दिखता है इन गरीब, मजदूर परिवारों का क्या होगा? सरकार या कोई भी समाज सेवी संस्थाओं का ध्यानाकृष्ट इन व्यवसायियों पर नहीं है। अवश्य इन कामगारों के पक्षधर में हूँ, इनके लिए बैकल्पिक व्यवस्था, उचित मार्गदर्शन, आर्थिक सहायता देकर भविष्य में आजिविका का कुछ न कुछ साधन उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

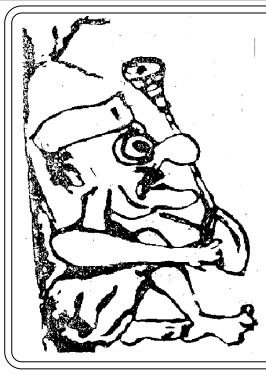

फसक

दाज्यू, कनफुसिया से गंदला होने वाला ठैरा

सड़ेले-गंधेले बिल-बाउचर बनाकर डकार मारते हैं बल

दाज्यू, राज्य के सरकारी विभागों में शपथ पत्र के बिना शिकायतें मान्य नहीं होंगी। फर्जी शिकायतों के अम्बार को देखते हुए यह निर्णय लेना पड़ा है। दाज्यू, हम तो पहले ही कह रहे थे कि शिकायतों पर अमल कैसे होगा, सड़ेले-गंधेले बिल बाउचर बनाकर डकार मारते हैं बल। सुरदा बता रहा है- 'झाड़ियों की आड़ में मल-मूत्र करने वाला सोनू जब से नौकरी में लगा है, बालीबुड से नीचे बात ही नहीं करता था। पहाड़ में नौकरी लगी तो यूपी से एक खाट दो चादर बोककर चल दिया। पड़ोसियों में बहुत खुशी हुई कि पढ़ा-लिखा सोनू नाम का लड़का नौकरी के लिये इतनी दूर आया है लकिन सोनू ने अपनी आदत के अनुसार वही सब किया जो वह करता रहा है। इलाके के लोग परेशान हो गये क्योंकि उनके धनिया पोदीना, प्याज लहसुन के झाड़ के पास नियमित रूप से मल का ढेर लगाना शुरू कर दिया था। दो बार झपटमारी करते हुए बहुत पिट चुका है। उसके बाद भी अपने को इलाके का चरणसिंह बता रहा है।'

दाज्यू, रामू बेचारा करे भी तो क्या? बचपन से जवानी तक जो आदत बनी रही, अब थोड़ा ही सुधरेगी। कनफुसिया से गंदला होने वाला ठैरा। अपने को बड़ा दिखाने के लिये साब लोगों के कान में फूंक मारना सबसे सरला उपाय हुआ। कोई कुछ कहे बता दो, हम खुशबू वाला क्रीम लगाते हैं। खुद ही फर्जी बिल बनाना और खुद ही नगद भुगतान लिख कर चाउमिन-मोमो खाने वाले मोनू को इलाके वालों ने जुतिया दिया था बल। लेकिन सोनू नहीं सुधर रहा है। डबरैल सिंह बता रहा था- 'सोनू ने अपने बालकों को नकल कराने के लिये सारी ताकत लगा दी। यदि पुराने कागज पलट दिये जाएं तो इसका पापड़ बन जाएगा। अपने ही पाल्यों की परीक्षा अपने आप बेशर्मी से लेता रहा और मोहल्ले में ओलम्पिक चैम्पियन होने का दावा करने लगा।' आफिस वाला धरपकड़ ने साब को बताया- 'प्रिन्ट निकालने के लिये टोनर 500 रुपये का लाते हैं लेकिन सोनू बार बार 1200 रुपये का बिल थमा देता है। कागज के जहाज बनाता है और ताकता रहता है।' दाज्यू, भ्रष्टाचार की चरबी जब ज्यादा चढ़ जाती है तो उसे तेजाब से भी नहीं धोया जा सकता है। गोलू बता रहा है- 'ऐसे भ्रष्टाचारियों के भुतिया डालकर सुधार किया जायेगा। इन्होंने पूरा मोहल्ला रौंद रखा है और दिनभर रामतेरी गंगा मैली हो गई....गाना बजता रहता है।'

दाज्यू, पूर्व मंत्री हरक सिंह भी ईडी की पूछताछ में पक चुके होंगे। जब फुल पॉवर में थे हरक दा ने भी रुतवा खूब गांठा था।

दाज्यू, सड़ेले-गंधेरे.....देखकर क्या करोगे? बदबूदार आइटम ठैरे। तभी तो शराब की दुकानों में ताबड़तोड़ छापेमारी करनी पड़ी। ओवररेटिंग और मनमानी की शिकायत तो बार-बार मिलती रहती थी लेकिन जब सीएम ने गुस्सा किया तो आबकारी वालों ने हाथ-पैर हिलाए बल। दाज्यू, अल्मोड़ा के जल जीवन मिशन कार्यों में गड़बड़ी पर पेयजल निगम प्रबन्धन ने जूनियर इंजीनियर को निलम्बित कर दिया। दाज्यू, ये तो जेई है। मिशन से जुड़े एक ठेकेदार के पास 50 से ज्यादा योजनाओं का जिम्मा है लेकिन वह जेल में है। किस-किस का पता-ठिकाना ढूंढा जाए। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी के खिलाफ कथित आय से अधिक सम्पत्ति मामले में केस दर्ज करने की मांग पर कोर्ट ने गोपन से रिपोर्ट तलब की है। इधर नैनीताल जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने डेढ़ करोड़ से अधिक की धोखाधड़ी के मामले में आरोपित रितेश पाण्डे निवासी जेल रोड तिराहा हल्द्वानी की जमानत अर्जी खारिज कर दी है। चलो, कनफुसिया के दौर में कुछ नहीं से कुछ हो भी रहा है।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

खेल का जुनून और..

प्रथम पृष्ठ का शेष

हैं जिन्होंने अपने संकल्प को बनाए रखा। आईएमएफ लाइजनिंग अफसर के रूप में इनकी तैनाती होती रही और देश विदेश के पथारोहण पर्वतारोहण दलों के साथ काम करने का अवसर मिला। जर्मन, स्वीट्जरलैंड, इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया सहित कई देशों के एडवेंचर खेल से जुड़े मित्रों के प्रशस्ति पत्र इनके पास आते रहे हैं। उत्तराखण्ड की चोटियों पर अभियान के अलावा हिमांचल खम्खा के पार, नन्दाकोट, मिलम गलेश्यिर, अपर स्लांग, फोर्ट वेस्टर्न पूना हिल तमाम जगह अभियान के हिस्सों में मर्तोलिया जी रहे हैं। खेलों के लम्बे सफर को पूरा करने के बाद आज भी इन्हें विभिन्न प्रदेशों में होने वाली प्रतियोगिता में आमंत्रित किया जाता है। आयु वर्ग के विशेष मैचों में इनके खेल का चमत्कृत प्रदर्शन देखने को मिलता है। उपलब्धियों से भरे बेसुमार प्रमाण पत्र इनके पास हैं। टेबल टेनिस के कुशल खिलाड़ी होने के कारण अपने अनुभवों का लाभ नये खिलाड़ियों और युवाओं को दे रहे हैं। मर्तोलिया जी ने अपने घर पर ही टेबल टेनिस एकेडमी चलाकर नये बच्चों को प्रोत्साहित किया है। इनके प्रशिक्षण केन्द्र में हर आयु वर्ग के खिलाड़ी जुडे हैं। इसके अलावा जोहार मिलन केन्द्र में खेल को प्रोत्साहित करने के लिये वरिष्ठ खिलाड़ियों के साथ सक्रिय रहते हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

समीक्षा

हिमांक और क्वथनांक के बीच-1

डॉ.प्रयाग जोशी

सन् 2008 में उत्तरकाशी के गंगोत्री बांक से पैदल चलकर अलकनन्दा गल होते हुए बद्रीनाथ के रास्ते चमोली निकलने का इरादा लेकर नैनीताल के अनूप साह, प्रदीप पाण्डे और शेखर पाठक ने साहसिक और जोखिम भरी यात्रा में जाने का निर्णय किया था। अनुमानत: एक सौ किमी लम्बी यात्रा है यह। उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद वहाँ की दो सदानीरा इन पवित्र नदियों के जलागमों और उनके ग्लेशियरों को देखने के कौतुक, साहस, क्षमतादि कूबतों को हिमश्रृंगों की तरफ अजमाने के अभिशनिक आयोजन जितने ही लोकप्रिय होते जा रहे हैं, उतनी ही उस विध में रोजगारों की तलाश भी जारी है वहाँ के नौजवानों की। यह प्रशंसनीय है।

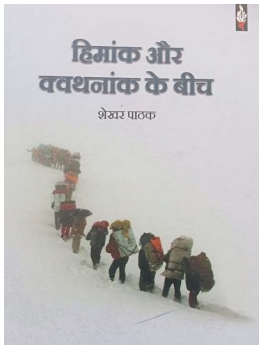

हिमानियों का भाषा-भूगोल रचने, हिम श्रृंगों की गणना करने, उनकी सही-सही ऊँचाई नापने, वहाँ की बर्फानी दरियों, तालों, दलदलों और उनके गर्भ में जमा हुई हिमराशि की परतों का काल निर्धारण और नाम-निर्धारण करने के लिए पहुँचने वाली टीमों को खुद रास्ता भी इजाद करना पड़ता है। वहाँ सतत बरसने वाली बर्फ को साफ करते रहने, वहाँ ठहरने के लिए सुरक्षित स्थान ढूँढने और काम करने लायक परिस्थितियों के निर्माण की बहुत दुश्वारियां होती हैं। ऐसे कामों को अंजाम देने वाली एजेंसियों की उत्तराखण्ड में भारी जरूरत है।

बहरहाल जिस कालखण्ड में उक्त विवेचित यात्रा की गई वहाँ 'माउण्टेन शेफर्ड' नाम की एजेंसी सेवादारी कर रही थी जिसने 9 सितम्बर से 19 सितम्बर के बीच यात्रा कराने की जिम्मेदारी ली।

एजेंसी ने तीन टैंकरों के साथ छ: सहायक सहयोगी लड़कों को यात्रियों के साथ भेजा। दसवां लड़का गाइड था। यह दल अकेला नहीं था। साथ में एक और सात सदस्यी आस्ट्रियायी ट्रैकरों का भी था। उनके लिए बत्तीस सहयोगी भारवाही, गाइड वगैरह नियुक्त किए थे एजेंसी ने। वे सब मिलाकर 39 की संख्या के हो गए थे। दोनों दलों की कुल मिलाकर उनन्चास संख्या की मूर्तियों ने उनन्चास हवाओं की तरह नन्दनवन से कालिन्दी खाल व चतुरंगी हिमानी तक की यात्रा मजे से की। कालिन्दीखाल से आगे राजखरक से घासतोली के बीच उन्हें खराब मौसम की वजह से दृश्यहीनता झेलनी पड़ी। चौबीस घण्टे तक लगातार जारी रही हिमवर्षा में चलना पड़ा। वजन घटाने के लिए भारी सामान जहाँ तहाँ छोड़ना पड़ा। 19 सितम्बर की सुबह बची-खुची सूजी-पजीरी और नि:शेष स्टाक में रहे मेवा मिष्ठानों का नाश्ता तो मिला। अगले दिन की दुपहरी तक उसी पर निर्भर रहने की मजबूरी आ गई। नौबत यहाँ तक आ गई कि किताब के लेखक को मात्र एक छुहारे को मुँह से चुभलाते-चुभलाते अपने को उर्जस्वित करते रहना पड़ा रातभर भी। जहाँ निरन्तर गिरती बर्फ में 'ह' की आवाज बुदबुदाने की, बनिस्पद अपने किए हुए उच्छिष्ट-अमेध्य को दफनाने से भी कष्टकर था, अपनी कूबत की क्षमता को अजमाने लेखक ने यात्रा गाईड हरीश से आईसऐक्स मांगा और कदम रखने की जगह बनाने के लिए बर्फ में ज्योंही चोट मारी, दस-बाहर चोटों में ही हांफ उठनी शुरू हुई। कपड़ों के भीतर पसीना छलक आया। लक्षणों का अनुमान कर टीम को 'क्वथनांक' की उष्मा से सीसी के फट जाने की जैसी अनहोनी की आशंका हुई। कारण उसकेऋ परिपाश्वं और परिस्थितिज थे। 'आरवाताल' की जगह रातवासा किया जा सकता था। उन्होंने ऐसा न करके जल्दी-जल्दी दो हाल्टों का एक हाल्ट बनाकर एक दिन बचाना चाहा। स्थान-स्थिति और दूरियों का सही ज्ञान नहीं था। रात जैसा ही दिन और दिन भी रात जैसा ही। भू-भौतिकी मालूम नहीं। 49 सदस्यों की टीम में कोई ऐसा न था जो कभी वहाँ गया हो। बर्फ के नींचे आरवा का दरिया है कि अलकनन्दा का, यह भी सन्देहास्पद था। सन्न थे सभी अपने-अपने में डूबे हुए। सभी के दु:खों का एक दु:ख था गन्तव्य पर किसी तरह पहुँच जाऐं सही सलामत।

चलते-चलते एक नेपाली नदी में गिर पड़ा। उसने पलटा खाया और उठ खड़ा हो चलने में लग गया। एक आस्ट्रियायी व्यक्ति का ब्यौलिपिटार जैसा टिन का बक्सा नदी में गिर पड़ा और उलट-पलट कर बहता जाता रहा। उसे देखते हुए चलते जाने के सिवाय कोई क्या कर सकता था? एक हम सफर साथी की, जोड़े की एक छड़ी गिर गई। उसने लपक कर उठाने में क्षण भर की विलम्ब न किया तो हाथ आ गई। नहीं तो वह भी चली जाती। किसी एक का और बह गया सामान। किसी ने पत्थर के ऊपर, भीगे हुए कपड़ों का गट्ठर रख कर छोड़ दिया और आगे जाता बना। सभी समझ रहे थे हल्का सामान ढोने में ही खैरियत है। ये सब इवेंण्ट इकट्ठे एक जगह के नहीं, ठौर-ठौर घटित होते जा रहे थे रास्ते चलते। टैंकर लोग टूटी माला के मनकों की नाईं बिखरे-बिखरे थे। पर नेहरू पर्वतारोहण संस्थान की दी हुई रस्सी से जुड़े हुए फोटोओं में वे आकर्षक दिख रहे हैं। वे अब-जब क्लोजअप होते तो एक दूजे से फुसफुसाते हुए हुस्स-हुस्स पूछते थे घास तोली पहुँचने में कितने घण्टे और लगेंगे?

सुबह के 5 बजने को थे। राजखरक से चलने के बाद 24 घण्टे में वे घासतोली की ऋज में जहाँ पहुँचे थे, घासतोली का आईटीबीपी और सेना का बेस यहाँ से 5 किमी दूर था। इन्होंने वहाँ एक विशालकाय पत्थर के क्रोड में कुछ घण्टे रूककर रात गुजारने का निश्चय किया। काफी राहत हुई। दूसरे लोग जो अज्ञात बयाबान के दूसरी तरफ से टौर्चो की रोशनी फैंक रहे थे, बोले ऊपर से लैण्ड स्लाइड हो रहा है, उधर मत जाओ। शेखर पाठक को मलाल है कि वे उस मातृछाया जैसे बोल्डर पत्थर की फोटू नहीं खींच पाए जिस के आसरे टीम ने कुछ घण्टे दम साधी थी।

वर्षा फिर शुरू हो गई थी। दूसरी, तीसरी तरफ बिखरे-ठहरे साथी टैंकर अपनी-अपनी दिशा की खोज में थे। वहाँ से नेपाली साथी लौट रहे थे। लेखक के मन में झुरझुरी उत्सुकता थी पूछने की कि उन्होंने क्या देखा लैण्डस्लाइड में? गोरखों ने बताया कि वे तीन मृतकों को देख आए हैं। सुबह होते-होते उन्होंने अपने प्रिय सेवादार खीमराज की मृत देह देखी। जब पूछा कि अभी उनके कितने लोग लापता हैं तो उन्होंने बताया आठ। अगले दिन छ: मृतकों के शव मलवे से निकाले जाने की खबर मिली।

दस दिनों चली उक्त यात्रा के दौरान लिखे गए रूक्कों की पुस्तकीय वस्तु रूप में विस्तारित सामग्री का प्रकाशन 'हिमांक से क्वथनांक तक' शीर्षक से 2024 में नवारुण : 303 जनसत्ता अपार्टमेण्ट्स, सेक्टर-5 वसुधारा गाजियाबाद ने किया है। हिमालय के टैंकरों, साहसी घुमक्कड़ों, उत्तराखण्ड की यात्रा पर आने वाले पर्यटकों और यात्रा साहित्य में रूचि रखने वाले पाठकों के लिए 425 रूपये मात्र मूल्य की यह किताब साहित्यिक विधा में लिखी गई उत्तराखण्ड पर पठनीय एक जरूरी सचित्र गाइडबुक भी है। वह वहाँ अद्यावधि संचालित हुए ट्रैंकिंग अभियानों का इतिहास और उत्तराखण्ड पर लिखी गई यात्रा विधा की साहित्यिक कृति तो है ही। किताब के पृष्ठों पर क्रमवार छपे अरुणोदय में दिपते शिवलिंग पर्वत की दिव्य चोटी से लेकर चतुरंगी गल, सतोपंथ पर्वत, आरव्रा नदी के जलागम, बासुकीताल, कालिन्दी खाल से लिया गया कामेट शिखर आदि के आर्ट पेपर पर छपे हुए चित्र संग्रहणीय तो है ही नित्य चित्र में दर्शनीय भी हैं। तीन चित्र वहाँ के प्राकृतिक पुष्पोद्यानों के हैं। पत्थरों पर उगी पुष्पावली का चित्र तो हर वनस्पति विज्ञानी की बैठक में टांगने के लिए जैसा है। स्वामी सुन्दरानन्द के खींचे श्वेतश्याम सुरालय के चित्र हैं। घास चरते, सोए हुए और चलते हुए भी भरलों की दाँगें हैं। हरी चोचों वाले कौवे हैं। गरुड़ हैं, डफिया मुनाल हैं, गौरैयाएँ हैं। भरलों के साथ घास कुतरते सफेद चूहे हैं। त्रिलोचन की कविता के जैसे 'सब सुन्दर जगस्प सुन्दर हैं।'

किताब का वर्ण्य विषय डायरी के मानिंद है। शिल्प उसका, विगताययान को समकाल से जोड़ता चलता है। सन् 2008 में जो अनागत था, बाद के वर्षों में समकाल हो गया। शेखर पाठक सतत यात्री रहे हैं उत्तराखण्ड की धरती के ही नहीं मानसरोवर वाले तिब्बत-नेपाल-भारत-चीन, भूटान और नैनसिंह मिलम्वाल के समग्र काम के पढ़े, लिखे, खोजे छपे-छपाए की धरती के भी। प्रस्तुत किताब में उस समस्त की झाई, धूप छायी आनी स्वाभाविक थी, आई है। शेखर के पास जैसे मन्तव्य वस्तु की कभी कमी नहीं वैसे ही लिखने के लि, संचित सामग्री भी इतनी प्रभूत होती है कि किताब में यह, भरे हुए वर्षाती नौले के पानी की तरह छलक-छलक पड़ी है। उत्तराखण्ड में विभिन्न मांगों के लिए विगत एक सौ वर्षों से चलाए जाते रहे सामाजिक आन्दोलनों, अभियानों और लोकयानों के इतिहासों का अध्ययन जिस प्रकार शेखर पाठक को पढ़े बिना अधूरा रहता है उसी प्रकार गोमुख से सतोपंथ तक की बांक को जिन-जिन लोगों के चरणों ने नापा उनके इतिवृत्त को पढ़े बिना इस किताब की अन्तर्वस्तु की समझ अधूरी रहेगी। खुदा का जिक्र अधूरा है मुस्तफा के बगैर।

किताब के शुरू के चालीस पृष्ठों में टिहरी से लेकर गंगोत्री तक के आधुनिकीकरया के दो शानदार अध्याय हैं। चीड़बासा, भोजबासा और गंगोत्री के वनों की पुनर्जीवन्तता देखकर आनन्द हुआ। 1967 में मैंने उस हिस्से को खल्वाट होते हुए देखा था। गंगोत्री नेशनल पार्क में हरीतिमा छाई है। हर्षवती और रतनसिंह के योगदान सुनते तो थे, देखने और पढ़ने में आए।

उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद हुए भौतिक विकास और उसके परिणामों का लेखक ने मित्रस्यचक्षुषाअवलोका है। भौगोलिक क्षमता से अधिक विकास लाद देने वाली सरकारी योजनाओं पर असरहीन गुस्सा भी जगह-जगह फूटता हुआ दिखाई देता है, अन्यथा वहाँ सब

शेष पृष्ठ 5 पर

ज्योतिष की बातें- 195

16 सितम्बर 2024 को सूर्य समराशि कन्या में प्रवेश करेगा। वहाँ पर केतु से युति होगी तथा मंगल और गुरु की दृष्टि भी पड़ेगी। अत: सूर्य के फलों में उग्रता अधिक होगी लेकिन नियन्त्रित भी रहेगी। अगले एक माह कर्क, मेष, धनु व वृश्चिक राशि के जातकों को सूर्य स्वास्थ्य, आत्मसम्मान आदि अपने कारक विषयों में शुभफल प्रदान करेगा। अन्य राशियों को अभी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

18 सितम्बर 2024 को शुक्र स्वराशि तुला में प्रवेश करेगा। उप पर कोई शुभाशुभ दृष्टि अथवा युति भी नहीं होगी। अत: अगले 26 दिन शुक्र सांसारिक सुख आदि अपने कारण विषयों में मेष के अतिरिक्त सभी राशियों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा।

15 सितम्बर 2014 बुध स्थानभेद से सिंह राशि में पूर्व दिशा में अस्त हो गया है अत: अगले 35 दिन बुध के शुभाशुभ फलों न्यूनता प्रतीत होगी। अनन्त चतुर्दशी तिथि, उदयकाल में न्यूनतम त्रिमुहूर्ता तिथि में अनन्त भगवान का व्रत किया जाता है। तदनुसार मंगलवार 17 सितम्बर 2024 को अनन्त भगवान का पूजन किया जाएगा।

पितृपक्ष- अश्विन कृष्णपक्ष को पितृपक्ष कहा जाता है जो कि बुधवार 18 सितम्बर 2024 को प्रतिपदा श्राद्ध के साथ प्रारम्भ हो जाएगा। अगले 15 दिन पितरों के निमि श्राद्ध और तर्पण किया जाएगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 86

अस्पताल अर्थात रोगप्रसार

इस समय देश में अस्पतालों की संख्या बहुत अधिक हो चुकी है। सरकारी अस्पतालों के साथ-साथ प्राइवेट अस्पतालों की संख्या उससे भी कई गुना है। साथ ही मेडिकल स्टोर तो इतने अधिक खुले हैं कि शायद आज का प्रमुख व्यवसाय औषधि विक्रय ही हो गया है। हर गली में कई-कई एमबीबीएस डाक्टर अब मिल जाते हैं। डाक्टरों, फार्मेसिस्टों, अस्पतालों, पैथोलॉजीकल लैबों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। इतना सब होने के बावजूद भी न तो रोगों की संख्या कम हो रही है और न ही रोगियों की। जिस गाँव में, बस्ती में अस्पताल खुल जाता है वहाँ पर तुरन्त ही रोग और रोगी बढ़ जाते हैं। वास्तव में आजकल प्रचलित इस चिकित्सा पद्धति व्यवसाय का उद्देश्य लोगों को रोग से छुटकारा दिलाना नहीं है बल्कि चिकित्सा व्यवसाय को बढ़ावा देना ही है। जनता को अप्रत्यक्ष रूप से अनावश्यक दवाइयाँ देकर स्थाई रूप से बीमार करना और फिर उसका शोषण करना ही है। आम आदमी को यह बात समझनी चाहिए और उसी के अनुसार अपना व्यवहार करना चाहिए। यथासम्भव अंग्रेजी दवाइयों से बचना चाहिए और इसके लिये प्राकृतिक जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

यही बात बढ़ते हुए विद्यालयों, विश्वविद्यालयों के सम्बन्ध में समझनी चाहिए और उसी प्रकार बढ़ते हुए न्यायालयों, वकीलों की संख्या के सन्दर्भ में। अर्थात् विद्यालयों से ज्ञान का विनाश और वकीलों से न्याय का विनाश हो रहा है। इस स्तम्भ में प्रकट की गई मरेरी बातों से किसी का सहमत होना आवश्यक नहीं है। फिर भी यदि आप सहमत होते हैं तो इन बातों का प्रचार प्रसार करना चाहिए।

-सरल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

बोट हाउस क्लब की सदस्यता महंगी

नैनीताल। नैनीताल बोट हाउस क्लब की सदस्या महंगी हो चुकी है। देश के 67 नामचीन क्लबों से सम्बद्धता के कारण इसकी सदस्यता अहम मानी जाती है। क्लब ने कई निर्णय लिये हैं। सदस्यता शुल्क ढाई लाख रुपये से बढ़ाकर 5 लाख किया गया है। इसमें 18 प्रतिशत जीएसटी जोड़कर यह रकम 6 लाख रुपये होती है।

स्टेडियम में हुए निर्माण की जांच हो

अल्मोड़ा। हेमवती नन्दन बहुगुणा स्टेडियम में हुए निर्माण कार्यों की जाँच की मांग को लेकर खेल प्रेमियों ने कबीना मंत्री को ज्ञापन सौंपा। कहा मैदान को विकसित करने और सुन्दरीकरण के लिये 4.29 करोड़ का बजट दिया गया लेकिन निर्माण कार्यों में भारी अनियमितता बरती गई है। उद्घाटन के एक माह बाद ही दीवारों से रंग निकलने लगा है।

सातताल झील किनारे हटाया अतिक्रमण

नैनीताल। झील विकास प्राधिकरण की टीम ने सातताल झील के किनारे अवैध तरीके से खुली तीस दुकानों और फड़ों को जेसीबी से ढहा दिया। प्रभावित दुकानदारों ने प्राधिकरण की टीम का विरोध किया। कहा पहले विभाग दुकानों के सापेक्ष दुकानें बनाये और आवंटित करे। अवर अभियन्ता ने बताया कुछ वर्ष पूर्व झील किनारे दुकानों को लेकर सर्वे किया गया था।

मसूरी में शहीदों का संग्रहालय बनेगा

मसूरी। मसूरी स्थित शहीद स्थल पर राज्य आन्दोलन के बलिदानियों की याद में संग्रहालय बनेगा। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मसूरी गोलीकाण्ड की बरसी पर शहीद स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए यह घोषणा की। कहा यह संग्रहालय से राज्य आन्दोलनकारियों के त्याग और बलिदान के बारे में भावी पीढ़ी को जानकारी मिलेगी।

कांडे कन्याल में भू धंसाव का जायजा

बागेश्वर। जिलाधिकारी अनुराधा पाल के निर्देश पर प्रशासन की टीम ने काण्डा के काण्डे कन्याल में गांव का निरीक्षण करते हुए आवासीय भवनों, मन्दिर व सड़कों के धंसाव को देखा। जांच की पूरी रिपोर्ट जिला प्रशासन को सौंपी जाएगी।

खुमाड़ के शहीदों को श्रद्धांजलि

अल्मोड़ा। सल्ट के खुमाड़ गोलीकाण्ड में शहीद हुए दो सगे भाइयों सहित चार स्वतंत्रता सेनानियों को उनकी शहादत दिवस पर श्रद्धांजलि दी गई। कार्यक्रम में केन्द्रीय राज्यमंत्री अजय टम्टा, पूर्व विस अध्यक्ष गोविन्द सिंह कुन्जवाल, विधायक महेश जीना, पूर्व राज्यसभा सांसद प्रदीप टम्टा मौजूद थे।

दुष्कर्म की घटनाओं से उत्तराखण्ड में अशान्ति

नन्दानगर में बंद और आक्रोश

गोपेश्वर। दुष्कर्म की बढ़ती घटनाओं से उत्तराखण्ड प्रदेश पूरी तरह अशान्ति से घिरा हुआ है। बच्चियों की सुरक्षा व महिलाओं को सम्मान की मांग को लेकर जगह-जगह प्रदर्शन हो रहे हैं। देखने में आया है कि कुकर्म की घटनाओं में नेतागण ज्यादा सक्रिय हैं। जिन मामलों का खुलासा हुआ है उनमें पकड़े गये नेताओं को उनकी पार्टी ने निष्कासित कर दिया और पुलिस कार्रवाई चल रही है। मामलों में राजनीतिक रंग भी दिया जा रहा है।

प्रदर्शन के मामले में सबसे बड़ी हलचल चमोली जिले में है। जिले में बाहरी लोगों के सत्यापन में ढिलाई और किशोरी को भगाने में मदद करने वालों की गिरफ्तारी को लेकर नन्दानगर (घाट) में व्यापारियों ने प्रतिष्ठान बन्द करते हुए प्रदर्शन किया। जिला मुख्यालय गोपेश्वर और पोखरी में जुलूस निकाल कर प्रदर्शन में हजारों लोग शामिल हुए। तनाव देखते हुए प्रशासन ने निषेधाज्ञा लागू कर दी।

बताते चलें कि 22 अगस्त को किशोरी के साथ अश्लील हरकत के बाद उपजे तनाव का सिलसिला बना हुआ है। लोगों ने जुलूस प्रदर्शन के दौरान तोड़फोड़ की। जिसमें 300 से अधिक व्यक्तियों पर मुकदमा दर्ज किया गया। मुकदमा दर्ज होते ही यह आग और भड़क उठी। आन्दोलनकारियों ने कहा कि पुलिस प्रशासन अपराध पर लगाम लगाने के बजाय उनकी आवाज दबाना चाह रहा है। बाहरी लोगों का सत्यापन नहीं होने से आपराधिक किस्म के लोग यहां बस रहे हैं और पहाड़ के शान्त वातावरण को दूषित कर रहे हैं।

गोपेश्वर में विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ताओं ने जिलाधिकारी कार्यालय का घेराव किया। उन्होंने डीएम के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजते हुए बाहरी व्यक्तियों व फेरी करने वालों के सत्यापन की मांग की।

मुकेश बोरा घिरे, आरोपों की बौछार भाजपा ने किया किनारा, समर्थक उतरे

हल्द्वानी। दुष्कर्म के आरोपी मुकेश बोरा पर आरोपों की बौछार हो चुकी है। नैनीताल दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लालकुआं के अध्यक्ष मुकेश बोरा पर एक महिला ने जैसे ही दुष्कर्म का आरोप लगाया बबंडर मच गया। बोरा की गिरफ्तारी की मांग को लेकर लालकुआ में जबर्दस्त प्रदर्शन हुआ। पीड़िता को लेकर पुलिस ने जो पड़ताल की उसमें भी मामले खुलने लगे। इस बीच पीड़िता ने पत्रकार वार्ता कर कहा यदि 24 घण्टे के भीतर मुकेश बोरा की गिरफ्तारी नहीं हुई तो वह आत्मदाह कर लेगी। कहा तमाम साक्ष्य उपलब्ध कराने के बाद भी पुलिस आरोपी के खिलाफ कार्रवाई नहीं कर सकी।

भाजपा के साथ भगवा धारी मुकेश की आफत देख सवाल उठे पार्टी क्या कर रही है तो भाजपा द्वारा मुकेश की गिरफ्तारी को लेकर विशाल जुलूस निकाला गया। इस बीच मुकेश की पत्नी ने समर्थकों के साथ अलग से प्रदर्शन करते हुए उन्हें फंसाने की बात कही। चूंकि यह पूरा मामला बड़ा है इसलिये इसके कई बिन्दु पर जांच हो रही है। इसी दौरान एक और महिला ने बोरा पर उत्पीड़न का आरोप प्रकाश में आया है। बताया जा रहा है कि उत्तराखण्ड को-आपरेटिप डेयरी फेडरेशन में तैनात महिला कर्मचारी ने पहले ही इसकी शिकायत की थी। मुकेश और उसके चालक के खिलाफ पूरा मामला बना हुआ है। मुकेश की जमानत की अर्जी खारिज हो चुकी है।

कोटाबाग बाजार में छेड़छाड़ पर केस

कालाढूंगी। कोटाबाग बाजार में एक चुवती से छेड़छाड़ और उसके साथी के साथ मारपीट की घटना ने सुरक्षा इन्तजामों पर सवाल खड़े किये हैं। कोटाबाग जैसे कस्बे में इस प्रकार की खुलेआम घटना से लगने लगा है कि महिलाओं की सुरक्षा के लिये एकदम सख्त इन्तजाम किये जाने होंगे। लफंगों द्वारा राह चलते छेड़छाड़ व दुष्कर्म जैसी घटनाएं जगह जगह हो रही हैं। कोटाबाग की इस घटना में कार सवाल चार युवक शामिल थे। इस बीच पुलिस द्वारा गश्त बढ़ाते हुए छेड़छाड़ रोकने के लिये नियमित अभियान चलाया जा रहा है। बालिकाओं को सुरक्षा के लिये बताया गया है।

सितारगंज के स्कूल में मासूम से छेड़

सितारगंज। क्षेत्र के एक गांव निवासी महिला ने कोतवाली में अपनी चार वर्षीय बच्ची के साथ दुष्कर्म की बात कहते हुए तहरीर सौंपी। पुलिस ने पीड़ित बच्ची का मेडिकल कराया जिसमें गुप्तांग में चोट के हल्के निशान बताए गये हैं। मामला दर्ज करने के साथ ही आरोपी तीन नाबालिकों को पकड़ा है। बाल अधिकार संरक्षण आयोग के सदस्य सुमन राय कहती हैं कि बच्चों में बिगड़ी मनोविकृति के पीछे अशिक्षा और मोबाइल का दुरुपयोग बड़ा कारण हो सकता है।

लोहाघाट में गढ़ी कहानी, सुधारगृह में

लोहाघाट। क्षेत्र में एक नाबालिक छात्रा के साथ हुई छेड़छाड़ की घटना की सूचना से आक्रोशित लोगों ने थाना घेरते हुए आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग की। पुलिस ने जब पूरे मामले का खुलासा किया तो पता चला कि नाबालिक बालक-बालिका एक-दूसरे को जानते हैं। मेडिकल रिपोर्ट में शारीरिक सम्बन्ध की पुष्टि हो चुकी है। घर से स्कूल न आकर बालक के घर ही वह थी। जब स्कूल प्रबन्धन ने परिजनों से जानकारी मांगी तो बालिका ने एक कहानी गढ़ दी कि रास्ते में चार युवकों ने उसे नशीला पदार्थ सुघाया और छेड़छाड़ की। परिजनों की तहरीर के पर पुलिस कार्यवाही हुई। बालिका को न्यायालय में पेश करने के बाद बाल सुधार गृह अल्मोड़ा भेज दिया गया।

मुंहबोला ताऊ करने लगा शोषण

हल्द्वानी। बीमार पत्नी की आड़ में मुंह बोला ताऊ अपनी ही भतीजी का शारीरिक व मानसिक शोषण करने लगा। जब पीड़िता ने शारीरिक शोषण का लाइव वीडियो बनाकर घरवालों तक पहुंचाया तब उन्हें बात पर भरोसा हुआ।

बनभूलपुरा थाना क्षेत्र में ग्राम छप्पार मुजफ्फरनगर निवासी पीड़िता के 5 भाई बहन है और पिता रोडवेज में सेंविदा चालक हैं। बनभूलपुरा में रहने वाला जुबैर आलम पीड़िता के पिता का दोस्त है और रोजवेज के चालक के पद से सेवानिवृत्त है। बताया जाता है कि आरोपी ने बीमार पत्नी की आड़ में पीड़िता का शोषण करने लगा। परिवारवालों को इस बात पर भरोसा ही नहीं था लेकिन पीड़िता ने जब लाइव वीडियो से सारी हरकत दिखाई तो मामला खुला है।

परिक्रमा

काशीपुर-रामनगर में किशोरियों से दुष्कर्म, वीडियो भी बनाया

काशीपुर। आइटीआई थाना क्षेत्र के ग्राम में एक किशोर को एक भवन में ले जाकर सामूहिक दुष्कर्म किया गया। पीड़िता ने उसी दिन घटना की जानकारी दे दी थी लेकिन लोकलाज से चुप रहे। इसके बाद अगले दिन दुष्कर्म का वीडियो प्रसारित होते ही हड़कम्प मच गया। मामले में तीन नाबालिकों का हाथ है। रामनगर। पुलिस में मामला आया है कि नाबालिक को बन्धक बनाकर दुष्कर्म किया गया। पीड़िता की माता ने पुलिस को बताया कि उनके गांव का रहने वाला किशोर उसकी नाबालिक बेटी को अपने घर बुलाकर ले गया था जहां घटना हुई। इसमें मारपीट का आरोप भी लगाया गया है।

हल्द्वानी में होगी रेसलिंग, खली भी

हल्द्वानी। डब्ल्यूटब्ल्यूई की तर्ज पर एक बार फिर हल्द्वानी में डब्ल्यूटब्ल्यूई वर्ल्ड हैवीवेट चैम्पियन रह चुके द ग्रेट खली रिंग में उतरेंगे। 14 सितम्बर को पंजीकृत 20 रेसलरों के रिंग में उतरने का अनुमान है। हरीश रावत सरकार में आठ साल पूर्व ऐसा आयोजन हल्द्वानी में हुआ था, जिसके लिये विधायक रंजीत रावत बेहत सक्रिय थे

हिलजात्रा में आस्था का सैलाब

पिथौरागढ़। सोरघाटी का लोकपर्व हिल जात्रा में आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा। परम्परागत रूप से भगवान शिव के अवतार माने जाने वाले लखिया बाबा कुमौड़ मैदान में उतरे। मुखौटे धारण कर अवतरित होने वाले इस उत्सव को कृषि से भी जोड़ा जाता है। इस बार टनकपुर में भी हिलजात्रा का प्रदर्शन किया गया।

अंडरवर्ल्ड पीपी अब सन्यासी

अल्मोड़ा। अंडरवर्ल्ड प्रकाश पाण्डे उर्फ पीपी को जूना अखाड़ा की ओर से अल्मोड़ा पहुंचे अखाड़ा के थानापतियों द्वारा कारागार में दीक्षा दी गई। दीक्षा देने के साथ ही उन्हें कई मठों का उत्तराधिकारी भी बनाया है। श्रीपंचदशनाम जूना अखाड़ा के थानापति राजेन्द्र गिरी की पत्रकार वार्ता के बाद मामला तूल पकड़ चुका है। अखाड़े के संरक्षक महन्त हरी गिरी ने जांच समिति गठित कर दी है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

ह्यांकी जन आरोग्य समिति के अध्यक्ष

देहरादून। प्रदेश के पूर्व आईएएस अरविन्द सिंह ह्यांकी को राज्य स्वास्थ्य प्राधिकरण, उत्तराखण्ड के अन्तर्गत आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना व अटल आयुष्मान योजना के सुचारू संचालन हेतु गठित कार्यकारिणी समिति का अध्यक्ष बनाया गया है। शासन के सचिव डॉ.आर.राजेश कुमर की ओर से इसकी सूचना जारी की गई।

आयकर आयुक्त जंगपांगी हल्द्वानी में

हल्द्वानी। प्रधान आयकर आयुक्त नरेन्द्र सिंह जंगपांगी ने हल्द्वानी में कार्यभार संभाल लिया है। आईआरएस श्री जंगपांगी अपनी सेवाओं के क्रम में मुम्बई के बाद मुरादाबाद और अब हल्द्वानी में हैं। भारतीय राजस्व सेवा के लम्बे अनुभव के साथ ही वह सामाजिक कार्यों में हमेशा अग्रणीय रहे हैं।

दांतू में जसुली लला पार्क का सौन्दर्करण

देहरादून/धारचूला। दारवीर जसुली बूढ़ी शौक्याणी के सम्पत्ति को ऐतिहासिक धरोहर कर ग्राम दातू में उनकी मूर्ति स्थापित करने सम्बन्धी आदेश हुआ है। इसके तहत मूर्ति सौन्दर्यकरण, पार्क क्षेत्र विस्तारीकरण और उच्चीकरण किया जाएगा।

विलुप्त धर्मशालाओं का उत्थान होगा

देहरादून। दारवीर जसुली लला द्वारा निर्मित विभिन्न धर्मशालाएं जो विलुप्त हो रही हैं, उनका उत्थान होगा। अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी साहसिक विंग ने सभी इस प्रकार की धर्मशालाओं की सूचना देने को कहा है।

हिमांक और.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

भव्य है। वास्तविक भव्यता गंगोत्री से आगे चीड़वासा, भोजबासा, नन्दनवन और तपोवन में है, इसे कौन नकार सकता है। भोजवासा से तनिक उदीची में गोमुख का भयभंजक चित्र देखते रहने का मन करता है नन्दनकानन व तपोवन कीगुफाएं, ओड्यार, झोपड़ियाँ, कुटियों, आधुनिकता की धज दिखा रही है। स्नान, शौच, विश्रामादि के इन्तजामातों ने दिव्यता को बदरूप नहीं होने दिया है। वहाँ के भरलों की दांगें, पीलीचौंचों के कौवौ के झुण्ड, चेतक हेली काप्टर जैसी रेंगती चीलें, फुदकती चिड़ियायें, इधर-उधर कुछ ढूंढ़ती छिपकलियां, चूहों और चीटियों ने भी परिपूर्ण प्राकृतिकता को भरा-पूरा रखने में अपना योगदान किया है। बन्दर, सुअर, शाही, बाघ, बघेरे अभ्यारण्य में चले गए हैं या माल- भाबर और दून-देहली की तरफ पलायन कर गए हैं। वहाँ न तो सुरंगों के बैठने का खतरा है न नदियों के बंधानों के फूटने का। न गाड़ियों का जाम है। बहरहाल चरणन चल कर जाइये नन्दन-कानन तपोवनन। क्रमशः

श्रद्धांजलि-

पत्रकार हरिमोहन शर्मा को मातृशोक

रामनगर। वरिष्ठ पत्रकार, राज्य आन्दोलन कारी, नवल पत्रिका के सम्पादक हरिमोहन शर्मा की माता विद्यावती की विगत दिवस निधन हो गया। 87 वर्षीय श्रीमती विद्यावती अपने पीछे पुत्र हरिमोहन, श्यमा शर्मा, किशोर शर्मा सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। इनके ज्येष्ठ पौत्र रेलवे में महाप्रबन्धक, पौत्रबधू चकराता में एसडीएम हैं। पिघलता हिमालय परिवार अपने घनिष्ठ साथी परिवार की मुखिया स्व. विद्यावती को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

मस्तमौला डी. एन. पन्त हमेशा याद रहेंगे

हल्द्वानी। महिला डिग्री कालेज के सेवानिवृत्त प्राचार्य प्रोफेसर देवकीनन्दन पन्त का विगत दिवस नैनी झील में डूबने से निधन हो गया। बेहद सजीले और सामाजिक व्यक्ति डीएन पन्त का एकाएक इस प्रकार जाना परिचितों को गहरा आघात दे गया है। उनकी पत्नी लम्बे समय से गम्भीर बीमारी से ग्रसित हैं, जिसके चलते वह मानसिक रूप से काफी परेशान थे। पिघलता हिमालय परिवार सुख-दु:ख के साथी स्व.पन्त को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

गिरधर सिंह पांगती समाज के चिन्तक

हल्द्वानी/मुनस्यारी। थल इण्टर कालेज से सेवानिवृत्त पूर्व प्रधानाचार्य गिरधर सिंह पांगती का विगत दिवस निधन हो गया। मुनस्यारी बाजार में ही इनका घर है परन्तु पिछले कुछ समय से पांगती जी दुर्गापाल कालोनी, पीलीकोठी, हल्द्वानी में रह रहे थे। एक शिक्षक के रूप में अपनी सेवा देने के अलावा वह सामज के चिन्तक के रूप में सचेत रहते थे। पिघलता हिमालय परिवार अपने वरिष्ठ साथी-सहयोगी स्व.गिरधर सिंह जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

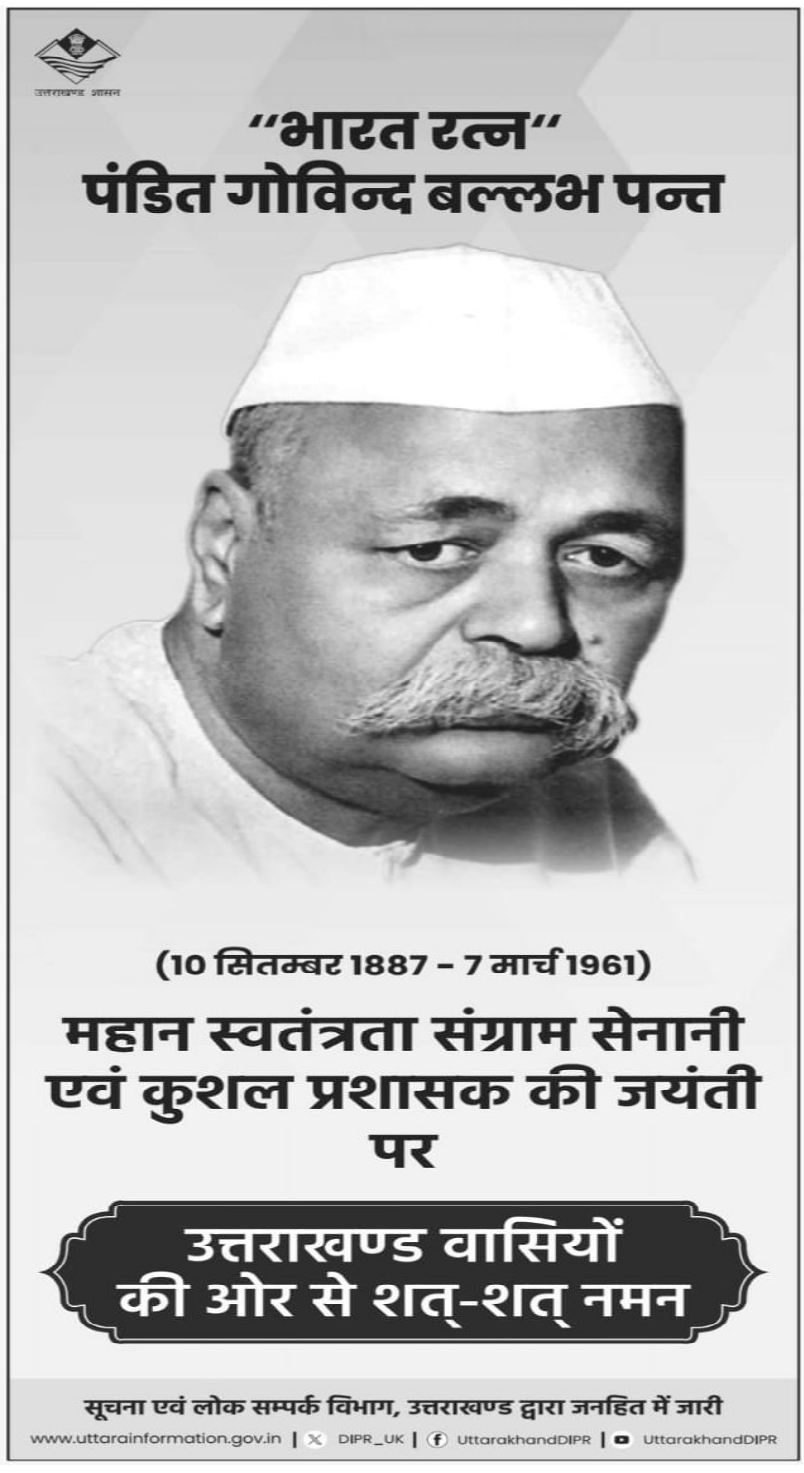

अंडरवर्ल्ड पीपी के फिर से किस्से

सन्त बनने की इच्छा, जाँच होगी

अल्मोड़ा। अन्डरवर्ल्ड प्रकाश पाण्डे उर्फ पीपी के किस्से फिर से चर्चा में हैं। असल में पी.पी. ने आगे का जीवन सन्यासी रूप में जीने की सोची और मामला आगे बढ़ा। इसके बाद अल्मोड़ा जेल में दीक्षा देने की बात जैसे ही श्रीपंचदशनाम जूना अखाड़ा के थानापति राजेन्द्र गिरी ने कही। चारों ओर चर्चाएं हुईं। इस बीच अखाड़े के संरक्षक महन्त हरी गिरी ने इस मामले में जाँच समिति गठित कर दी है।

इस गरमाते मामले पर कारागार अधीक्षक जयन्ती पांगती का कहना है कि जेल में दीक्षा जैसा कोई कार्यक्रम नहीं हुआ। कार्यक्रम के लिये अनुमति हेतु आवेदन किया गया था लेकिन जेल प्रशासन ने यह प्रार्थना पत्र खारिज कर दिया था। कहा कि अखाड़ा के थानापति के दावे का जेल से कोई वास्ता नहीं है।

इस बीच सन्त समाज से लेकर अन्य सक्रिय हैं। बताया गया है कि यूपी के नगीना में जाँच समिति सदस्यों की बैठक में निर्णय लिया गया है कि रिपोर्ट मिलने के बाद अखाड़ा मामले में निर्णय लिया जायेगा। अल्मोड़ा के रानीखेत स्थित खनैइया गाँव निवासी पीपी कभी छोटा राजन का दाहिना हाथ हुआ करता था। इन दिनों अल्मोड़ा जेल में उम्रकैद की सजा काट रहा है।

फिलहाल पूरा मामला क्या है आने वाले दिनों में पीपी के चर्चे ज्यादा ही होने वाले हैं।

बालिका सुरक्षा के लिये कार्यक्रम जारी

नैनीताल जनपद सहित सभी जगह बालिका सुरक्षा के लिये कार्यक्रम जारी हैं। स्कूलों व संस्थाओं में महिला हैल्प लाइन, पुलिस व प्रशासन के लोग जाकर बैठकें कर बालिकाओं को बढ़ते जा रहे अपराधों के बारे में बताते हुए सतर्क रहने को कह रहे हैं। साथ ही स्कूल, बाजार या कहीं आते जाते होने वाली दिक्कत पर पुलिस व महिला हेल्पलाइन की मदद के लिये नम्बर बताए गये हैं।

पन्तनगर में फिर से दुष्कर्म की घटना

पन्तनगर। पन्तनगर में फिर से दुष्कर्म की घटना ने बता दिया है कि आपराधिक मामले बढ़ते जा रहे हैं। क्षेत्र के एक व्यक्ति ने पुलिस को बताया कि उसकी 16 वर्षीय पुत्री को क्षेत्र की ही एक 12 वीं की छात्रा दोस्त अपने साथ ले गई, पार्टी के बहाने एक सरकारी आवास में दुष्कर्म की घटना हुई। बताया कि आरोपी युवक ने छात्रा की अश्लील वीडियो इंस्टाग्राम पर अपलोड कर दी। पुलिस ने मामले की जाँच कर रही है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

घर से बाहर अपनों का साथ

होटल लक्ष्य इन

मदकोट

सम्पर्क
7351285555

नरेन्द्र सिंह रावत

न तेरा न मेरा Thats

APNA GHAR चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

मो.- 9458920379, 6396098804

YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत
होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल
भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी
(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)
गोदाम- जोहार एसोसिएट्स, बच्चीनगर- १, कमलुवागांजा, हल्द्वानी
मो.- 7409440813, 7500619761

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236 8958525979, 9411134775

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE

Family Guest House-
Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From
Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

नन्दा उत्सव की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

सी.एस. मर्तोलिया
(रिटा.कमांडेंट)
हिलव्यू काटेज
जोहार नगर
हल्द्वानी

ज्वालाप्रसाद एण्ड सन्स
सदर बाजार, रानीखेत

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)